पद ३८

(राग: भैरवी - ताल: धुमाळी)

देवा या या ना कां कोप आला। देवा गा बा रे हो पाव मला।।धु.।। देवा ना त्यागा या पतितकुला। देवा हा जन पीडित शरण तुला।।१।। देवा अपराधा आमुच्या विसरा। देवा ना आम्हां तारक दुसरा।।२।। देवा या मायाजाला आंवरा। देवा चिन्मार्तांडा ऐक्य करा।।३।।